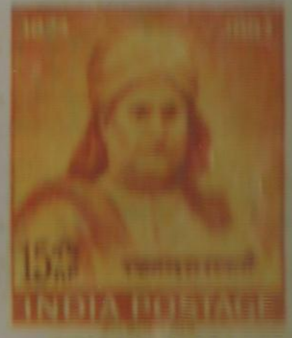
























'हिन्दुत्व के शतकानुशतकों से दुर्बल हो जाने के कारण भारतवर्ष बार-बार पराधीन हुआ, इसका प्रत्यक्ष दर्शन महर्षि दयानन्द को हुआ, इसलिए उन्होंने जन्मगत जातिभेद और मूर्तिपूजा जैसे दौर्बल्यकारक परंपराओं की अन्त्येष्टि करने वाले विश्वव्यापी महत्वाकांक्षा युक्त आर्यधर्म का उपदेश दिया । इस कोटि के दयानन्द यदि हजार वर्ष पूर्व इस देश में उत्पन्न हुए होते, तो इस देश को पराधीनता के दिन ही देखने न पड़ते । इतना ही नहीं, अपितु विश्व के एक महान् राष्ट्र के रूप में भारतवर्ष दैदीप्यमान् रहता ।'

—तर्कतीर्थ : पं० लक्ष्मण शास्त्री जोशी

महर्षि दयानन्द : काल और कृतित्व

कुशलदेव शास्त्री

महर्षि दयानन्द : काल और कृतित्व



प्रा० डॉ० कुशलदेव शास्त्री

होती यह मैं नहीं कह सकती।'

स्वामीजी ने विपिन पर रमाबाई की मति 'कुमति' करने का जो आरोप लगाया है, उसके मूल में कुल दो कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि पण्डिता ने लिखित रूप में पूछताछ करने के बाद भी अपनी विपिन से हुए विवाह की बात को छिपाए रखा। दूसरा कारण यह था कि—स्त्री जाति के उद्धार के लिए आजन्म ब्रह्मचारिणी के रूप में एक समर्पित समाज सेविका के रूप में स्वामी दयानन्द पण्डिता रमाबाई को देखना चाहते थे। यदि स्वामीजी को विपिन-रमा के विवाह का यथासमय पता चलता तो वे न तो विपिन पर कोई आरोप करते और न ही पण्डिता से विशेष अपेक्षाएँ रखने का प्रश्न उनके मन में शेष रहता।

सन्दर्भ ग्रन्थ—ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन—प्रथम भाग : सम्पादक—पं० भगवद्दत्त बी० ए०। २. महर्षि दयानन्द सरस्वती को लिखे गए पत्र और विज्ञापन—प्रथम भाग : सम्पादक—युधिष्ठिर मीमांसक। ३. पण्डिता रमाबाई-लेखक—पद्मिनीसेन गुप्ता। ४. विश्रब्ध शारदा : सम्पादक—गं० दे० खानोलकर। ५. संक्रमण : लेखक—सरोजिनी वैद्य। ६. रमाबाई—ज्योत्स्ना देवधर। ७. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित : लेखक—देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय। ८. नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती-लेखक—डॉ० भवानीलाल भारतीय। **सन्दर्भ : पत्र-पत्रिका**—१. सुबोध पत्रिका-१७ जनवरी १८८२। २. ज्ञानोदय-१३-४-१८८२। ३. श्रीहट्ट सम्मीलनीर हीरक जयन्ती स्मृति पुस्तिका : सन् १९३६। ४. महाराष्ट्र टाइम्स १८ अक्टूबर १९९२। **सन्दर्भ सहयोगी व्यक्ति**—१. (स्व०) श्री श्यामसुन्दर आढाव : नासिक। २. श्री भास्कर जाधव—पुणे। ३. (स्व०) मृणालिनी जोगळेकर : मुंबई। ४. प्रा० डॉ० जगदीश आचार्य—नांदेड़। ५. श्री जवाहर सत्यपाल राठौर—नांदेड़। **सन्दर्भ सहयोगी ग्रन्थालय**—हुतात्मा पानसरे स्मारक ग्रन्थालय : पीपल्स कॉलेज : नांदेड़ (महाराष्ट्र), पिन-४३१ ६०२।

—वेदवाणी : संपादक : महामहोपाध्याय पं० युधिष्ठिर मीमांसक : मासिक : मई १९९४ : से साभार।



(७)

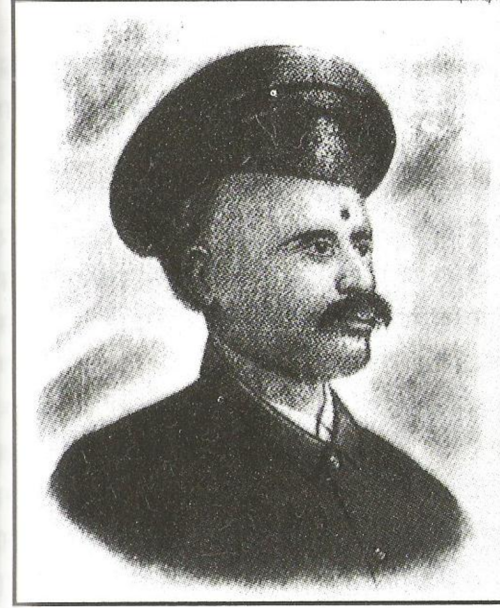
प्राच्य विमानविद्या संशोधक श्री शिवकर बापूजी तळपदे

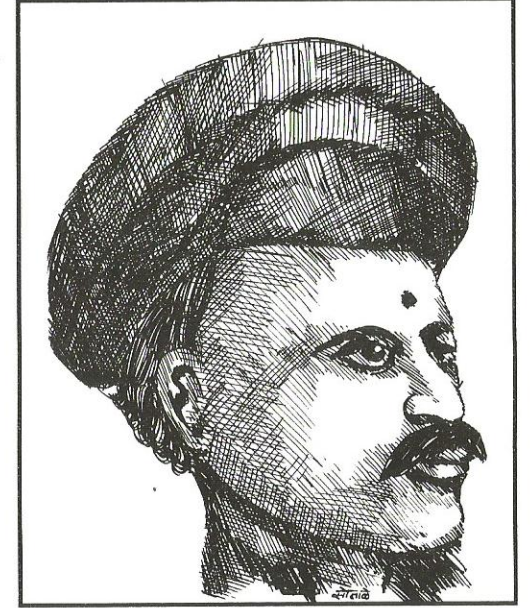
प्राच्य विमान विद्या संशोधक श्री शिवकर बापूजी तळपदे का जन्म ईस्वी सन् १८६४ में हुआ था। महाराष्ट्र की सुप्रसिद्ध और सर्वोत्कृष्ट चित्रशाला 'जे० जे० स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई' में आप चित्रकला के शिक्षक थे। इसी अध्यापकीय जीवन काल में आपने वेदादिक प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर आधुनिक युगीन प्रथम विमान बनाने का प्रारम्भिक प्रयोग किया था। जिस समय आप यहाँ शिक्षक थे, तो उसी समय श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने उक्त स्कूल में एक विद्यार्थी के रूप में प्रवेश किया था। वे तळपदेजी से केवल तीन वर्ष छोटे थे। सम्भव है इन दोनों वैदिक विद्वानों ने विमान बनाने के सिलसिले में एकाधिक बार विचार विमर्श किया हो। श्री तळपदेजी ने 'योगशास्त्र का भूतार्थ दर्शन', 'गुरुमन्त्र महिमा' और 'प्राचीन विमान कला' नामक तीन ग्रन्थों की रचना की थी। उनके शास्त्राध्ययन और अध्यवसाय को देखकर कोल्हापुर (करवीर) के श्रीमत् शंकराचार्यजी ने उन्हें 'विद्या प्रकाश प्रदीप' नामक उपाधि से विभूषित किया था।

सन् १८९५ में चौपाटी पर जो विमान उड़ाने का सफल प्रदर्शन किया गया, उसके निर्माण में श्रीमती तळपदेजी के अतिरिक्त मुम्बई के पब्लिक वर्क्स विभाग के वास्तुशास्त्रविद् श्री पिटकर[१] का भी उल्लेखनीय सहयोग था। तळपदेजी ने इस स्वनिर्मित विमान का नाम 'मरुत्सखा' रखा था। तत्कालीन शासक और शासितों द्वारा यथोचित प्रोत्साहन और समुचित सुविधा न मिल पाने के कारण १८९५ के बाद आप विमान विद्या के क्षेत्र में और अधिक प्रगति नहीं कर पाए। सम्भवतः, अंग्रेज शासकों को यह पसन्द नहीं था कि यूरोपीय वैज्ञानिकों से पहले भारतीय वैज्ञानिक को विमान विद्या संशोधक का श्रेय मिले। आपने सन् १९०४ से १९०९ तक मराठी में



महर्षि दयानन्द सरस्वती : सन् १८८३ : शाहपुरा : रेखाचित्र





प्राच्य विमानविद्या संशोधक श्री शिवकर बापू तळपदे

'आर्यधर्म' मासिक का भी सम्पादन किया। आप मुम्बई के चीरा बाजार में स्थित 'डुकरवाडी' में रहते थे। प्राच्य विमान विद्या संशोधक के साथ-साथ आप एक आर्टिस्ट और फोटोग्राफर के रूप में भी प्रसिद्ध थे।

सन् १९०४ में आपने अपने फोटोग्राफिक स्टूडियो को 'वेद धर्म प्रचारिणी सभा' का कार्यालय भी बना दिया था। यथोपलब्ध विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती विनिर्मित 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका', 'सत्यार्थप्रकाशादि' साहित्य को पढ़कर या 'शामराव कृष्ण आणि मण्डली' तथा 'वेद धर्म प्रचारिणी सभा' के सम्पर्क में आकर अथवा पं० चिरंजीवलाल वर्मा, पं० बालकृष्णजी शर्मा और स्वामी नित्यानन्दजी के सान्निध्य में रहकर आप सन् १८८५ के आस-पास महर्षि दयानन्द और वेदोक्त आर्यधर्म के सर्वात्मभाव से अनुयायी बन गए थे और आर्यसमाज के सम्पर्क में आने के दस वर्ष बाद ही आपने मुम्बई की चौपाटी पर हजारों लोगों की उपस्थिति में आकाश में विमान उड़ाने का यशस्वी प्रयोग किया था।

इस समय तक विमान विद्या संशोधन के क्षेत्र में यूरोप और अमरिका को भी सफलता प्राप्त न हो पाई थी। राईट बन्धु, काउन्ट झेपलिन के नाम अभी तक दुनिया के सामने नहीं आए थे। ऐसे समय में एक आर्यसमाजी वैदिक विद्वान् द्वारा किया गया प्रयोग वस्तुतः अभिनन्दनीय और स्वर्णाक्षरों में उल्लेखनीय है। 'विशेष बात यह थी कि इस प्रयोग की कल्पना और इसकी समस्त साहित्य सामग्री पूर्णतः स्वदेशी थी। पाश्चात्य जगत् से वह उधार रूप में बिल्कुल भी नहीं ली गई थी[२]।' आश्चर्य है—ऐसे अप्रतिम आर्यावर्त्तीय आर्य विद्वान् का नामोनिशा कहीं भी नजर नहीं आता। आशा है अब तक जो अज्ञानवशात् या अनजाने उनकी उपेक्षा हुई है वह आगे फिर कभी न होगी। 'विमान-विज्ञान-विश्व' से जुड़े आर्यसमाज के इस स्वर्णिम अध्याय को अब हम भारतीय सदा-सदा के लिये संजोकर रखेंगे, क्योंकि जो कौम गाती नहीं वह मिट जाती है।

शिवकर बापू तलपदे और आर्यसमाज

'विज्ञान कथा' के लेखक प्रह्लाद नारायण जोशी के अनुसार श्री तळपदे आर्यसमाज के अनुयायी थे, इसीलिए वैदिक वाङ्मय[३] के विषय में उनके अन्तःकरण में विशेष प्रीति थी। 'अर्वाचीन भारतीय वैज्ञानिक' के लेखक प्रा० भालबा केळकर के अनुसार भी 'तळपदे आर्यसमाज के अनुयायी थे[४] और उनकी यह श्रद्धा थी कि प्रगत ज्ञान-विज्ञान वैदिक साहित्य[५] में परिपूर्ण रूपेण संचित और समाविष्ट है।'

आधुनिक युग के अप्रतिम वैदिक विद्वान् महर्षि दयानन्द ने श्री तळपदे की कर्मभूमि मुम्बई की कुल पाँच बार यात्रा की थी। और इस समय तळपदेजी की आयु १०, ११, १२ और १८ वर्ष की थी। बिना आधार के यह कह पाना सम्भव नहीं कि इस कालावधि में वे दयानन्दजी के सम्पर्क में कभी आ भी पाए थे या नहीं। स्वामीजी विरचित 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' का प्रकाशन मई १८७७ में हुआ था, जिसका एक अध्याय विमान विद्या से सम्बन्धित है। विमान बनाने से पूर्व श्री तळपदे के हाथों तक महर्षि की यह कृति पहुँच चुकी थी। श्री तळपदे ने जब १८९५ में[६] विमान का प्रदर्शन किया था तब उनकी आयु केवल ३१ वर्ष की थी।

स्वामीजी द्वारा लिखे गए ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'नौ-विमानादि प्रकरण' के सन्दर्भ में "बहुत से लोगों का यह कहना है कि दयानन्द सरस्वती ने पाश्चात्य वैज्ञानिक उन्नति को देखकर वेद से भी उन्हीं बातों को दिखाने का प्रयत्न किया है," पर महामहोपाध्याय पं० युधिष्ठिर मीमांसक के कथनानुसार—"वस्तुतः यह कथन ठीक नहीं है, क्योंकि पाश्चात्य देशों में सन् १९०१ में विमान की प्रथम उड़ान हुई थी, परन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन् १८७६ में यह पुस्तक लिखी थी। स्वामीजी ने जो कुछ लिखा है, वह भारतीय वाङ्मय के आधार पर ही लिखा है। रामायण, महाभारत और अन्य संस्कृत ग्रन्थों[७] में विमान का वर्णन भरा पड़ा है। राजा भोज के समरांगण-सूत्रधार ग्रन्थ (११वीं शती) में विमान बनाने का संक्षेप में वर्णन मिलता है।"

जैसी आपत्ति महर्षि दयानन्द की विमान विद्या के प्रकरण के विषय में उठायी गई है, वैसे ही या उससे मिलती-जुलती आपत्ति तळपदे द्वारा प्रस्तुत प्राचीन विमान कला के सन्दर्भ में लोगों द्वारा उठायी जा सकती है। वे यह भी कह सकते हैं कि—'उनका विमान विद्या विषयक ज्ञान तो विदेशियों के ही माध्यम से अपने तक पहुँचा

है।' पर उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि विमान आविष्कारक के रूप में राईट बन्धुओं के सुप्रसिद्ध होने से भी पाँच वर्ष पूर्व न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे और वडोदरा नरेश सयाजीराव गायकवाड की उपस्थिति में श्री तळपदे ने पूर्ण स्वदेशी उपकरणों के आधार पर मुम्बई में विमानोड्डान का सफल प्रदर्शन किया था।

आर्यसमाज और शिवकर बापूजी तळपदे के अन्त:सम्बन्धों को स्पष्ट रूप से जानने के लिए १८८५ में स्थापित 'शामराव कृष्ण आणि मण्डली' और सन् १८८६ में स्थापित 'वेद धर्म प्रचारिणी सभा' नामक दो संस्थाओं का इतिवृत्त जान लेना जरूरी है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि श्री शिवकर बापू तळपदे, महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की विचारधारा से केवल एकरूप ही नहीं थे, अपितु वे आर्यसमाजमय हो गये थे। दयानन्द सरस्वती के तो वे अप्रतिम परमभक्त थे। उनके द्वारा सम्पादित 'आर्यधर्म' मराठी मासिक के अंक भी इस तथ्य के साक्षी हैं।

शामराव कृष्ण आणि मण्डळी और तळपदे

डॉ० भवानीलाल भारतीय के अनुसार सन् १८८५ में मुम्बई में 'शामराव कृष्ण आणि मण्डळी' नामी एक संस्था स्थापित हुई, जिसने स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के मराठी अनुवाद प्रकाशित करने की योजना बनाई थी[९]। हमारा यह अनुमान है कि इसी संस्था के माध्यम से श्री तळपदे महर्षि दयानन्द के साहित्य और उनकी वेदोक्त विचारधारा से सुपरिचित हुए होंगे।

'शामराव कृष्ण आणि मण्डली' ने मार्च सन् १९०४ से 'आर्यधर्म' नामक मासिक भी शुरू किया था, जिसमें क्रमश: 'सत्यार्थप्रकाश' और 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' का श्रीपाद दामोदर सातवलेकर[१०] कृत मराठी अनुवाद प्रकाशित हुआ था। सर्वप्रथम वडोदरा नरेश सयाजीराव गायकवाड ने ही स्वामी नित्यानन्दजी से सत्यार्थप्रकाश का मराठी अनुवाद करवाने की हार्दिक अभिलाषा व्यक्त की थी। श्री सातवलेकर कृत मराठी अनुवाद श्री सयाजीराव गायकवाड को बहुत ही पसंद आया। और तदर्थ इस अनुवाद को उन्होंने पुरस्कृत भी किया[११]। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के सर्वप्रथम मन्त्री और अनुसंधित्सु पं० धर्मवीरजी (जिनकी जन्मभूमि हरियाणा और कर्मभूमि

पुणे-मुम्बई है) के अनुसार सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशन हेतु श्री गायकवाड ने आर्थिक अनुदान भी प्रदान किया था। डॉ० भवानीलाल भारतीय के अनुसार इसी सातवलेकर कृत मराठी अनुवाद का संशोधन श्री शिवकर बापू तळपदेजी ने किया था[१२]।

श्री तळपदे द्वारा सत्यार्थप्रकाश के संशोधन किए जाने की बात हमें बिल्कुल ठीक लगती है, क्योंकि क्रमश: सर्वप्रथम सत्यार्थप्रकाश का मराठी अनुवाद 'आर्यधर्म' मराठी मासिक में प्रकाशित हुआ था और इस मासिक के सम्पादक श्री शिवकर बापू तळपदे ही थे, अत: उन्होंने सम्भव है भाषा-शैली की दृष्टि से प्रकाशन से पूर्व मराठी सत्यार्थप्रकाश का संशोधन किया हो।

सत्यार्थप्रकाश के संशोधन वाली बात इसलिए भी ठीक लगती है कि श्री तळपदे और श्री सातवलेकर दोनों का सम्बन्ध 'सर जमशेट जिजीभाई स्कूल ऑफ आर्ट्स' से आया था। तळपदे इस चित्रशाला के शिक्षक थे, तो सातवलेकर ने इसी चित्रशाला में सन् १८९० ई० में एक विद्यार्थी के रूप में प्रवेश किया था[१३]। श्री तळपदे ने विमान का प्रारम्भिक ढांचा भी सबसे पहले इसी स्कूल में बनाकर बताया था। तळपदे और सातवलेकर दोनों भी अपने-अपने समय में आर्टिस्ट, फोटोग्राफर और वेदविद्या विशारद के रूप में सुप्रसिद्ध थे। एक ही स्कूल में तथा समानशील होने के कारण यहीं पर दोनों की निश्चित रूप से प्रगाढ मैत्री हुई होगी। आयु की दृष्टि से श्री तळपदे, सातवलेकरजी से केवल तीन वर्ष बड़े थे। 'आर्यधर्म' प्रकाशनकाल में सातवलेकर हैदराबाद में थे तो तळपदे मुम्बई में[१४]। अत: श्री तळपदे ने सत्यार्थप्रकाश का संशोधन किया यह तथ्य पूर्णतया विश्वसनीय प्रतीत होता है। इस लेख के लेखक को तळपदे द्वारा सम्पादित 'आर्यधर्म' मराठी मासिक की मार्च १९०४ से जनवरी १९०९ तक की फाइलें देखने का सौभाग्य मिला है। जिनसे यह स्पष्ट होता है कि 'शामराव आणि कृष्ण मण्डली' का कार्यालय मुम्बई के 'ठाकुर द्वार' क्षेत्र में था। इस मण्डली ने चारों वेदों की मूल संहिता, चारों वेदों की अनुक्रमणिका, सम्पूर्ण शतपथ ब्राह्मण, 'दशोपनिषद', 'निघण्टु', 'निरुक्त', 'अष्टाध्यायी', 'धातुपाठ', 'शतशब्द रत्नमाला' (ईश्वर के सौ नामों की मराठी में कविताबद्ध

व्याख्या), 'देशाटन' (स्वामी नित्यानन्दजी के व्याख्यान) और 'अठारह पुराण किसने लिखे?' (अठरा पुराणे कोणी लिहिली?) इत्यादि पुस्तकें प्रकाशित की थीं[१५]।

डॉ० भारतीय के अनुसार 'शामराव कृष्ण आणि मण्डळी' ने 'आर्याभिविनय', 'संस्कारविधि' तथा 'गोकरुणानिधि' भी मराठी में प्रकाशित की थी[१६]। इस मण्डली के कार्यालय में गुरुकुल कांगड़ी द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भी ग्राहकों की सुविधा की दृष्टि से उपलब्ध रहती थीं।

वेद-धर्म-प्रचारिणी सभा और तळपदे

आर्यसमाज और तळपदे के अभिन्न सम्बन्धों को स्पष्ट रूप से जानने के लिए वेद धर्म प्रचारिणी सभा का परिचय भी जान लेना जरूरी है, क्योंकि वे मुम्बई की 'वेद-धर्म प्रचारिणी सभा' के अभिन्न अंग थे। पं० इन्द्रविद्यावाचस्पति के अनुसार 'सन् १८८६ के नवम्बर मास में जब मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई थी, तभी मुम्बई के कुछ उत्साही नवयुवकों ने आर्यसमाज के समानान्तर एक 'वेद-धर्म प्रचारिणी सभा' नाम की संस्था स्थापित की। इस सभा के उपदेशक पं० भीमसेनजी शर्मा के शिष्य पं० बालकृष्णजी शर्मा थे। कालांतर (सन् १९०१) में यह संस्था पुनः आर्यसमाज में विलीन हो गई[१७], पर 'आर्यधर्म' मासिक अक्तूबर १९०४ के अंक में श्री तळपदे ने जो मराठी में निवेदन छापा है, उससे यहाँ इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि सन् १९०४ में भी 'वेदधर्म प्रचारिणी सभा' गतिशील थी, वहाँ यह तथ्य भी उजागर होता है कि शिवकर बापू तळपदे महर्षि दयानन्द के परमभक्त और अनुयायी थे। वह निवेदन इस प्रकार है—

''सभी लोगों को सविनय सूचित किया जाता है कि—'वेद धर्म प्रचारिणी सभा' अपने वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य दिनांक २५ सितम्बर १९०४ से 'कांदीवाडी' में 'मुम्बई वैभव' नामक मुद्रणालय के पास हमारे फोटोग्राफिक स्टूडियो में कर रही है।

प्रति रविवार को सायं ५ से ७ बजे तक यहाँ महर्षि-प्रणीत सत्यार्थप्रकाशादि ग्रन्थों का पठन होता है तथा इसी विषय पर शंका समाधान भी किया जाता है। अतः सभी सद्धर्माभिलाषी लोगों से

प्रार्थना है कि वे उपरोक्त स्थान पर पधारने की कृपा करें।

इस सभा का ध्येय लोगों को सद्धर्मामृत पिलाना है। यह सभा अपने मूल संस्थापक (स्व०) गुरुवर्य पं० चिरंजीलाल[१८] वर्मा की स्मारक है। इस स्मारक को स्थायित्व प्रदान करने के लिये सतत प्रयत्नशील और संघर्षशील रहनेवाला, आप सबका नम्र सेवक'

शिवकर बापूजी तळपदे

(आर्टिस्ट फोटोग्राफर व प्राचीन विमान विद्या संशोधक)''

'आर्यधर्म' मराठी मासिक और तळपदे

'आर्यधर्म' मराठी मासिक में प्रकाशित कुछ और विज्ञापन तथा निवेदन हम यहाँ दे रहे हैं, जिनसे यह पूर्णतया सिद्ध हो जाता है कि 'आर्यधर्म' के सम्पादक श्री शिवकर बापू तळपदे महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त और आस्थावान् वेदमतानुयायी आर्यसमाजी थे।

'ऋग्वेद' व 'यजुर्वेद' के मराठी भाषान्तर के सन्दर्भ में 'आर्यधर्म' जनवरी १९०९ के अंक में निम्नांकित विज्ञापन श्री तळपदेजी ने दिया है—

हम 'आर्यधर्म' मासिक के द्वारा महाराष्ट्रीय पाठकों को वैदिक धर्म स्वरूप (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका) का परिचय देते आ रहे हैं। 'वैदिक धर्म स्वरूप' इस पुस्तक में चारों ही वेदों के मुख्य-मुख्य विषयों से पाठकों को परिचित कराया ही है। अब यदि कम से कम दो हजार ग्राहक बने तो 'ऋग्वेद' व 'यजुर्वेद' का भाषान्तर—मन्त्र, पदपाठ, अन्वय, मराठी भाषान्तर, अकारादि क्रम से पद का अर्थ, भावार्थ सहित प्रतिमास 'ऋग्वेद' के १६ पृष्ठ और 'यजुर्वेद' के ८ पृष्ठ प्रकाशित करने का विचार है। अग्रिम वार्षिक शुल्क १.५० रुपया है। भाषान्तर का नमूना इसी अंक में दिया गया है। यदि किसी को पृथक् रूप से चाहिए तो एक आने की डाक टिकट भेजें, जिससे उन्हें भाषान्तर नमूने के आठ पृष्ठ भेजे जा सकें।

(निवेदक)

शिवकर बापूजी तळपदे

आर्यधर्म मासिक : पुस्तक कार्यालय,

ठाकुर द्वार के पास, मुम्बई

उपरोक्त अंक में ही 'आर्यधर्म पुस्तकमाला' के सातवें पुष्प के रूप में प्रकाशित 'गृहस्थाश्रम' पुस्तक का भी विज्ञापन है। पुस्तक की पृष्ठ संख्या ११७ और मूल्य डाक व्यय के अतिरिक्त सात आने है। 'आर्यधर्म' जुलाई १९०५ के अंक में ७० पृष्ठ और चार आने की 'ब्रह्मचर्य' पुस्तिका का विज्ञापन है। इसी अंक में वैदिक धर्म स्वरूप (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका) का विज्ञापन देते हुए लिखा है— *'वेदों के विषय में विदेशियों की क्षुद्र कल्पनाओं का यह ग्रन्थ प्रत्युत्तर है' तथा 'वैदिक धर्म की शिक्षा देनेवाला यह एक शिक्षक ही है'*। इसकी पृष्ठ संख्या २७५ और मूल्य केवल एक रुपया है। 'आर्यधर्म' जनवरी १९०९ के अंक में एक 'वेद विद्या प्रचारिणी संस्कृत पाठशाला' का विज्ञापन है जिस में कहा गया है कि— *'इस पाठशाला में विद्यार्थी चार वर्ष में 'अष्टाध्यायी', 'महाभाष्य' को पूर्ण कर वेदविद्या के मर्म को समझने का अधिकारी हो जायेगा*। इसी अंक में एक अन्य विज्ञापन में यह घोषणा की गई है कि 'वेद विद्या प्रचारिणी संस्कृत पाठशाला' में पढ़नेवाले छात्र यदि पहले वर्ष में उत्तीर्ण या प्रथम श्रेणी में आयेंगे तो उन्हें क्रमशः १० और १५ रुपये पारितोषिक के रूप में दिए जायेंगे।'

'आर्यधर्म' के जनवरी १९०९ के अंक में शिवकर बापू तळपदे की 'प्राचीन विमान कला' नामक ग्रन्थ का विज्ञापन है। जिससे इस ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण पुस्तक के यत्किंचित् स्वरूप का आभास मिलता है! विज्ञापन निम्न प्रकार है—

प्राचीन विमान कला

परम पवित्र 'वेद', 'वैशेषिक दर्शन', 'रामायण', सृष्टि निर्मित पक्षीरूपी विमान[११] व निरालंब परमधाम पहुँचाने वाला मनुष्य शरीररूपी विमान—इन पाँच साधनों द्वारा प्राचीन विमान कला के तत्त्वों के सन्दर्भ में मैं दस वर्षों से खोज कर रहा हूँ। इस प्रयत्न में अनेक सूक्ष्म सृष्टि तत्त्वों की खोज हुई है। इन उपलब्ध हुई सभी उपयुक्त बातों को सिद्ध कर और प्रायोगिक रूप से मेरे देशबन्धुओं के सामने प्रदर्शित कर उन्हें अपने पूर्वजों के कला-कौशल विषयक प्रत्यक्ष ज्ञान की जानकारी देने के लिए मैं यह प्रयत्न कर रहा हूँ, पर इसे सिद्ध कर प्रदर्शित करने के लिए बड़े पैमाने पर धन की आवश्यकता है, इसलिए कम से कम दस हजार रुपये तो प्रारम्भिक रूप में इस काम के लिये हमारे पास होना आवश्यक है। इन सूक्ष्म तत्त्वों का निरीक्षण-परीक्षण करने के लिए प्रयोगशाला की आवश्यकता है। इसके बिना प्रयोगों की शुरूआत ही सम्भव नहीं है। ऐसे काम या तो राज्याश्रय से या नव-नवीन अनुसंधान करने के लिए ही स्थापित लोकसंस्थाओं की ओर से होने चाहिएँ, परन्तु सम्प्रति, इस प्रकार के सहयोग मिल पाने की कोई आशा और सम्भावना नहीं है। यह देखकर फिर यह विचार किया है कि यथासम्भव स्वयं अपने आप ही कुछ करके देखा जाए। इसलिए मैंने 'प्राचीन विमान कला' के सन्दर्भ में अब तक जो संशोधन किया है, उसे पुस्तक रूप में जनता के सामने रखने का निश्चय किया है। इस प्रकार प्रस्तुत संकल्पित शोध-प्रयोग को और अधिक विकसित करने के लिए जो लगनेवाली राशि है उसे प्राप्त करने का विचार है। इसी ध्येय से प्रेरित होकर यह कार्य प्रारम्भ किया है। पूर्वजों के कला-कौशल्यादि को स्मरण कर मैं जो अपना यह कर्त्तव्यकर्म कर रहा हूँ, उसे अब पूर्ण करना मेरे देशबन्धुओं का कर्त्तव्य है। इसीलिए यह अनुरोध है कि वे इस पुस्तक के अधिकाधिक ग्राहक बनायें।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्राच्य विमान विद्या संशोधक श्री शिवकर बापू तळपदे वेदमतानुयायी और आर्यसमाजी थे। हम उन्हें प्रयोगधर्मी तथा अपूर्व निर्माणक्षम प्रज्ञावाला प्रतिभावान वैज्ञानिक-वैदिक विद्वान् कह सकते हैं।

सन्दर्भ

१. अर्वाचीन भारतीय वैज्ञनिक, प्रा० भालबा केळकर, पृष्ठ- १२।

२. अर्वाचीन भारतीय वैज्ञानिक, भाग २, प्रा० भालबा केळकर, पृष्ठ-१३।

३. जोशीजी के अनुसार ऋग्वेद के दसवें मण्डल के १९०वें मन्त्र पर महर्षि भारद्वाज ने जो टीका की है, उसके आधार पर श्री तळपदे ने यह विमान बनाया था। द्रष्टव्य—विज्ञान कथा (मरुत्सखाचे उड्डाण), पृष्ठ-३२।

४. अर्वाचीन भारतीय वैज्ञानिक, पृष्ठ १०।

५. प्रा० भालबा केळकर ने विमान विषय से सम्बन्धित ऋग्वेद

के जिन चार मन्त्रों की ओर संकेत किया है, उनके सन्दर्भ निम्न प्रकार हैं—

क्रम	**मण्डल**	**सूक्त**	**मन्त्र**	**क्रम**	**मण्डल**	**सूक्त**	**मन्त्र**
एक	१	१६५	२	दो	५	५३	३
तीन	५	५४	४	चार	८	७	३५

द्रष्टव्य—अर्वाचीन भारतीय वैज्ञानिक, पृष्ठ ११ / ६. तत्रैव, पृष्ठ–७।

७. आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने अपने 'शिक्षण तरंगिणी' नामक ग्रन्थ में विमान विद्या विषयक १७ सन्दर्भ ग्रन्थों का उल्लेख किया है जो कि निम्न प्रकार हैं—१. ऋग्वेद (मण्डल १, सूक्त ११८, मन्त्र १, २/४०/३, ३/४/३६, ६/५८/३), २. रामायण (पुष्पक विमान), ३. अभिज्ञान शाकुंतल (मन्त्री, दुष्यन्त को उत्तर दे रहा है कि—सम्प्रति हम परिवह वायुपथ के मार्ग में है। वायु के सप्त स्कन्ध या मार्ग हैं जिनका परिज्ञान विमान चालक के लिए आवश्यक है), ४. यन्त्र सर्वस्व (महर्षि भारद्वाज प्रणीत इस ग्रन्थ का वैमानिक प्रकरण बडोदरा के राजकीय पुस्तकालय में है), ५. शक्तिसूत्र (अगस्त्य कृत), ६. सौदामिनी ('ईश्वर' विरचित), ७–८ अंशुमत्तन्त्र व आकाश शास्त्र (भारद्वाज), ९. वायुतत्त्व प्रकरण (शाकटायन), १०–११, 'वैश्वानर तन्त्र' व 'धूम प्रकरण' (नारद), १२. विमान चन्द्रिका (नारायण), १३. व्योमयान तन्त्र (शौनक), १४. यन्त्रकल्प (गर्ग), १५. यानबिन्दु (वाचस्पति), १६. खेटयान प्रदीपिका (चाक्रायणि), १७. व्योमयानार्क प्रकाश (ढुण्ढिनाथ)। विमान विज्ञान विषयक प्राचीन भारतीय वाङ्मय की विशेष जानकारी के लिए जिज्ञासु पाठक आचार्य जी लिखित 'शिक्षण तरंगिणी' का १८वाँ प्रकरण पढ़ें।

८. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, नौविमानादिविद्या विषय, चौथी पादटिप्पणी, पृष्ठ–२२५–२२६।

९. आर्यसमाज का इतिहास, ५वाँ भाग, पृष्ठ–६१।

१०. यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि श्रीपाद दामोदर सातवलेकर तथा श्रीदास विद्यार्थी ये दो नाम दो व्यक्तियों के न होकर एक ही व्यक्ति के हैं। स्वयं अनुवादक ने अपने प्राक्कथन (भाषान्तरकर्त्यांचे दोन शब्द) के अन्त में 'श्रीदास विद्यार्थी' यह

नाम अंकित किया है। श्रीपाद दामोदर सातवलेकर के आद्याक्षरों के ग्रहण करने से ही श्रीदास यह संक्षिप्त रूप बनता है। पराधीनता के काल में जब अपने पास कोई सर्वसम्मत राष्ट्रगीत नहीं था, तब वेदों के आधार पर 'वैदिक राष्ट्रगीत' जैसी रचनायें प्रस्तुत करनेवाले सातवलेकरजी ने, सम्भव है तत्कालीन किसी विशिष्ट परिस्थिति के कारण 'श्रीदास विद्यार्थी' यह उपनाम या गुप्त नाम धारण किया होगा (द्रष्टव्य, आर्यधर्म, मराठी मासिक, सितम्बर १९०७, पृष्ठ ३ और ६)।

११. आर्यसमाज का इतिहास, ४ था भाग, पृष्ठ ५२१।

१२. आर्यसमाज का इतिहास, ५वाँ भाग, पृष्ठ ६१।

१३. आर्यसमाज का इतिहास, ४ था भाग, पृष्ठ ५२०।

१४. तत्रैव, ४ था भाग, पृष्ठ ५२१।

१५. आर्यधर्म, अक्तूबर १९०४ के अंक में इन पुस्तकों के ऊपर 'बेचने के लिये तैयार' (विक्रीस तैयार) शीर्षक से निम्नांकित अपील की गई है—

"क्या बाइबिल और कुरान जिसके संग्रह में नहीं ऐसा एक भी ईसाई और मुहंमदानुयायी है? ऐसी स्थिति में ज्ञान के सर्वोच्च शिखर पर आसीन कराने वाले वेद (परमात्मा द्वारा ज्ञान के माध्यम से पुरुषार्थ की सिद्धि के लिये दिए गए धर्म-ग्रन्थ) हम आर्यों के संग्रह में न हों, यह कितनी लज्जास्पद बात है।"

१६. आर्यसमाज का इतिहास, ५वाँ भाग, पृष्ठ ४८१।

१७. आर्यसमाज का इतिहास, द्वितीय भाग, पृष्ठ ९०।

१८. श्री चिरंजीलाल के विस्तृत परिचय हेतु देखें—डॉ० भवानीलाल भारतीय विरचित, 'आर्य लेखक कोश', पृष्ठ ७३। स्वामी श्रद्धानन्दजी लिखित आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' के 'धर्मप्रचार की धुन' प्रकरण में श्री चिरंजीवलाल का एक रोचक संस्मरण है। प्रा० राजेन्द्रजी जिज्ञासु ने श्री चिरंजीलाल का सर्वप्रथम जीवन चरित्र लिखने का श्रेय प्राप्त किया है।

१९. आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री के अनुसार—'भारतीय विमानज्ञ आचार्यों ने विमान की रचना का ज्ञान पक्षियों को देखकर प्राप्त किया था। पक्षियों के वेग और आकार की समता के आधार पर विमान की रचना एतद्विषयक सभी भारतीय ग्रन्थों में समान है। 'समरांगण

सूत्रधार' ग्रन्थ में भी विमान की रचना 'दारुमय पक्षी' की रचना के रूप में कही गयी है, तद्नुसार—दृढ़ काष्ठ का पक्षी बनाना चाहिए, उसके मध्य में अग्निस्थापन का घट बनाना चाहिए। घट में पारे और अग्नि का संयोग किए जाने पर पारद की शक्ति से विमान, इन्द्र के भवन के समान, आकाश में गरजता हुआ दौड़ेगा। प्राचीनकाल में विमान पारे से चलाए जाते थे, क्योंकि तत्कालीन ग्रन्थों में पैट्रोल से विमान चलाने का वर्णन नहीं मिलता। यदि पारे से विमान चलाने का पुनः प्रयास किया जाए तो पेट्रोल के आसन्न और भावी संकट से बचना सम्भव हो सकेगा।

—१. महाराष्ट्र मानस : महाराष्ट्र शासन का शासकीय मासिक-हिन्दी-मुखपत्र : १६ दिसंबर १९९१ तथा-आर्यसमाज : कल और आज : आर्यसमाज खण्डवा-स्थापना शताब्दी स्मारिका : १८८१-१९८१ : संपादक-इंजीनियर आदित्यपालसिंह आर्य : लोकार्पण १२ फरवरी १९९२ से साभार।



चतुर्थ अध्याय

महर्षि दयानन्द और महाराष्ट्र

(१)

मुम्बई आर्यसमाज के प्रारम्भिक सदस्य और वेदभाष्य ग्राहक

(१) क्रमांक	(२) नाम	(३) शिक्षा	(४) जाति	(५) वेदभाष्य ग्राहक संख्या
	(६) व्यवसाय	(७) पता		
१.	अक्षयकुमार मित्र	साधारण ज्ञान	बंगाली	३१८
	हीरे का काम करने वाला	घर नं०-५९, कालिका देवी की सड़क, मुम्बई		
२.	अण्णा मोरेश्वर कुंटे	एम० डी०	ब्राह्मण	३४४
	डॉक्टर	१. घर नं०-३४, कांदावाड़ी, मुम्बई २. गिरगाँव, बैंक रोड, मुम्बई		
३.	अण्णा मार्तण्ड जोशी	–	ब्राह्मण	३४२
	गवर्नमेंट सेंट्रल प्रेस में कर्मचारी	घर नं०-१४४, अग्यारी गली, मुम्बई		
४.	आत्माराम बापू दळवी	अंग्रेजी	प्रभु	३३४
	व्यापारी	घर नं०-३९, लोहारचाली, कांदेवाड़ी, मुंबई		
५.	आत्माराम कुंवरजी	साधारण ज्ञान	खत्री	३६५
	—	घर नं०-७९, जगजीवन की गली, मुंबई		
६.	ईशजी हरिजी	साधारण ज्ञान	खत्री	—
	—	—		
७.	ईश्वरलाल अमृतलाल	साधारण ज्ञान	ब्राह्मण	—
	अध्यापक	—		
८.	कल्याणजी नारायणजी	संस्कृत तथा अंग्रेजी	ब्राह्मण	३२७
	ग्रीव काटन एंड कंपनी में कर्मचारी	घर नं-६, भोईवाडा गली, मुंबई —		